OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 1 [Jan-Feb] Year 2026*

Research Article

निर्यात संवर्धन और रोजगार सृजन में खुर्जा सिरेमिक उद्योग का योगदान

तृप्ति सिंह [1*], डॉ. सारिका अग्रवाल [2]

[1] अर्थशास्त्र, मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * तृप्ति सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22792858

सारांश

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जनपद का खुर्जा नगर भारत के प्रमुख पारंपरिक सिरेमिक एवं पॉटरी उत्पादन केन्द्रों में से एक है। लगभग छह शताब्दियों की परंपरा से विकसित खुर्जा की पॉटरी ने समय के साथ पारंपरिक हस्तशिल्प से आधुनिक सिरेमिक उद्योग का रूप ग्रहण किया है। आज यहाँ घरेलू उपयोग की क्रॉकरी, सजावटी वस्तुएँ, स्टोनवेयर, सैनिटरी वेयर, विद्युत इंसुलेटर, वैज्ञानिक पोर्सिलेन तथा विभिन्न प्रकार के सिरेमिक उत्पादों का निर्माण किया जाता है। खुर्जा पॉटरी को भौगोलिक संकेतक (GI) के रूप में पंजीकरण प्राप्त है तथा इसे उत्तर प्रदेश सरकार की 'एक जनपद एक उत्पाद' (ODOP) योजना में प्रमुख उत्पाद के रूप में प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस कारण खुर्जा का सिरेमिक उद्योग केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था का आधार नहीं है, बल्कि निर्यात संवर्धन, रोजगार सृजन, कौशल विकास, उद्यमिता तथा क्षेत्रीय औद्योगिक विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

उपलब्ध सरकारी अभिलेखों के अनुसार खुर्जा सिरेमिक क्लस्टर में सैकड़ों लघु एवं मध्यम इकाइयाँ कार्यरत हैं तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। भारत सरकार के जिला निर्यात योजना दस्तावेज में खुर्जा क्लस्टर के लगभग 400 लघु-स्तरीय इकाइयों तथा लगभग 40,000 श्रमिकों से जुड़े व्यापक रोजगार आधार का उल्लेख मिलता है। दूसरी ओर, पर्यटन मंत्रालय के 'Incredible India' पोर्टल पर लगभग 25,000 श्रमिकों तथा 5,000–7,000 सहायक सेवा कर्मियों के रोजगार का उल्लेख है। ये आँकड़े इस उद्योग के रोजगार-प्रधान स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

यह शोध-पत्र खुर्जा सिरेमिक उद्योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, औद्योगिक संरचना, निर्यात क्षमता, रोजगार सृजन में भूमिका, सरकारी योजनाओं तथा प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि गुणवत्ता सुधार, डिजाइन नवाचार, ई-कॉमर्स, ब्रांडिंग, GI एवं ODOP का प्रभावी उपयोग, ऊर्जा दक्षता तथा निर्यात बाजारों के विविधीकरण के माध्यम से खुर्जा को वैश्विक सिरेमिक आपूर्ति शृंखला में अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया जा सकता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 10-01-2026
- **Accepted:** 12-02-2026
- **Published:** 28-02-2026
- **IJCRM:**5(1); 2026: 698-702
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह तृ, अग्रवाल सा. निर्यात संवर्धन और रोजगार सृजन में खुर्जा सिरेमिक उद्योग का योगदान. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):698-702.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: खुर्जा सिरेमिक उद्योग, खुर्जा पॉटरी, निर्यात संवर्धन, रोजगार सृजन, ODOP, GI टैग, MSME, सिरेमिक क्लस्टर, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारत में कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास केवल आर्थिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह स्थानीय संस्कृति, परंपरागत ज्ञान और रोजगार के संरक्षण का भी माध्यम है। विशेष रूप से वे उद्योग जो किसी विशिष्ट क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान से जुड़े होते हैं, स्थानीय अर्थव्यवस्था को व्यापक बाजार से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश ऐसे पारंपरिक उद्योगों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। बनारस की साड़ी, मुरादाबाद का पीतल, फिरोजाबाद का काँच, सहारनपुर की लकड़ी की नक्काशी और खुर्जा की पॉटरी इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

बुलन्दशहर जनपद का खुर्जा नगर इसी परंपरा में एक विशिष्ट स्थान रखता है। खुर्जा को लंबे समय से 'सिरेमिक सिटी' के रूप में जाना जाता है। केंद्रीय काँच एवं सिरेमिक अनुसंधान संस्थान (CSIR-CGCRI) के अनुसार खुर्जा में लगभग 600 वर्ष पुरानी पॉटरी निर्माण परंपरा है और यहाँ 494 से अधिक लघु-स्तरीय इकाइयों वाला एक महत्वपूर्ण व्हाइटवेयर क्लस्टर विकसित हुआ है। CGCRI का खुर्जा केन्द्र वर्ष 1981 में स्थापित किया गया था और इसका उद्देश्य विशेष रूप से लघु एवं ग्रामीण क्षेत्र की सिरेमिक इकाइयों को तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहायता प्रदान करना था।

खुर्जा की पहचान केवल घरेलू बाजार में बिकने वाले मिट्टी के बर्तनों तक सीमित नहीं रही है। आधुनिक समय में यहाँ निर्मित उत्पादों में क्रॉकरी, सजावटी वस्तुएँ, इंसुलेटर, स्टोनवेयर, सैनिटरी वेयर, पोर्सिलेन तथा अन्य सिरेमिक उत्पाद शामिल हैं। इन उत्पादों की देश के विभिन्न भागों में मांग है और कुछ उत्पादों का निर्यात भी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय बाजारों में किया जाता है। भारत सरकार के ऊर्जा दक्षता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रकाशित क्लस्टर संबंधी विवरण के अनुसार खुर्जा में लगभग 23 निर्यातोन्मुख पॉटरी इकाइयाँ रही हैं तथा इनके प्रमुख निर्यात बाजारों में यूनाइटेड किंगडम, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और संयुक्त अरब अमीरात आदि शामिल रहे हैं।

इस प्रकार खुर्जा सिरेमिक उद्योग को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है—पहला, यह एक पारंपरिक सांस्कृतिक उद्योग है; दूसरा, यह MSME आधारित औद्योगिक क्लस्टर है; और तीसरा, यह निर्यात एवं रोजगार की संभावनाओं वाला क्षेत्रीय आर्थिक केन्द्र है।

खुर्जा में पॉटरी निर्माण की परंपरा अत्यंत पुरानी मानी जाती है। उत्तर प्रदेश के जिला निर्यात योजना दस्तावेज के अनुसार खुर्जा की पारंपरिक पॉटरी का संबंध फिरोजशाह तुगलक के काल से जोड़ा जाता है। प्रारंभिक चरण में यहाँ सिरेमिक बर्तनों पर नीली कला एवं सजावटी डिजाइन का प्रयोग प्रमुख था। समय के साथ स्थानीय कारीगरों ने विभिन्न प्रकार की तकनीकों को अपनाया और खुर्जा का पॉटरी उद्योग एक व्यापक औद्योगिक क्लस्टर के रूप में विकसित हुआ। आधुनिक औद्योगिक विकास के साथ खुर्जा में पारंपरिक चाक-आधारित उत्पादन के साथ-साथ मोल्डिंग, ग्लेजिंग, फायरिंग और मशीन आधारित प्रक्रियाओं का उपयोग बढ़ा। इससे उत्पादन की मात्रा, उत्पादों की विविधता तथा बाजार की क्षमता में वृद्धि हुई।

CSIR-CGCRI ने खुर्जा के तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्थान के अनुसार खुर्जा केन्द्र ने ऊर्जा दक्षता, उत्पाद गुणवत्ता, प्रक्रिया सुधार, अपशिष्ट न्यूनीकरण, उत्पाद डिजाइन और क्लस्टर विकास जैसे क्षेत्रों में कार्य किया है। संस्थान ने बोन चाइना पोर्सिलेन, लो-मच्योरिंग स्टोनवेयर, कम लागत वाले सैनिटरी वेयर, ग्लेज्ड टेबलवेयर तथा ऊर्जा दक्ष भट्टियों जैसी तकनीकों के विकास में योगदान दिया है। इस तकनीकी परिवर्तन ने खुर्जा के उद्योग को पारंपरिक पॉटरी से आधुनिक सिरेमिक उत्पादन की ओर अग्रसर किया। यही परिवर्तन आगे चलकर निर्यात बाजारों में प्रवेश की आधारभूमि बना।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग मुख्यतः लघु एवं मध्यम उद्यमों पर आधारित है। इसकी एक विशेषता यह है कि उत्पादन में बड़े कारखानों के साथ-साथ परिवार आधारित तथा छोटे उद्यम भी सक्रिय हैं। इससे उद्योग का रोजगार प्रभाव अपेक्षाकृत व्यापक हो जाता है। उपलब्ध सरकारी स्रोतों में खुर्जा के औद्योगिक क्लस्टर की इकाइयों एवं रोजगार के संबंध में विभिन्न वर्षों के अलग-अलग आँकड़े मिलते हैं। District Export Action Plan में लगभग 400 लघु-स्तरीय इकाइयों का उल्लेख है, जबकि पुराने MSME क्लस्टर दस्तावेज में 20 पंजीकृत तथा 60 अपंजीकृत इकाइयों, लगभग ₹450 करोड़ के टर्नओवर और 25,000 रोजगार का उल्लेख किया गया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्लस्टर की संरचना समय के साथ परिवर्तित हुई है तथा विभिन्न सरकारी सर्वेक्षणों की परिभाषाओं एवं वर्षों के कारण आँकड़ों में अंतर पाया जाता है।

खुर्जा में निर्मित प्रमुख उत्पादों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है—

1. घरेलू क्रॉकरी एवं टेबलवेयर
2. सजावटी सिरेमिक उत्पाद
3. स्टोनवेयर
4. पोर्सिलेन एवं बोन चाइना
5. विद्युत इंसुलेटर
6. सैनिटरी वेयर
7. प्लांटर एवं फूलदान
8. मूर्तियाँ एवं कलात्मक वस्तुएँ
9. टाइल एवं अन्य निर्माण सामग्री
10. वैज्ञानिक एवं तकनीकी सिरेमिक उत्पाद।

उत्पादन की यह विविधता खुर्जा को केवल हस्तशिल्प केन्द्र न बनाकर एक बहुआयामी औद्योगिक क्लस्टर का स्वरूप प्रदान करती है।

निर्यात किसी क्षेत्रीय उद्योग को राष्ट्रीय एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रमुख माध्यम है। खुर्जा सिरेमिक उद्योग का निर्यात अभी अपनी पूर्ण संभावनाओं तक नहीं पहुँचा है, फिर भी इसके उत्पादों ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहचान बनाई है। भारत सरकार के खुर्जा/बुलन्दशहर जिला निर्यात योजना दस्तावेज में खुर्जा क्लस्टर के लिए निर्यात को एक प्रमुख विकास क्षेत्र माना गया है। दस्तावेज में विभिन्न सिरेमिक उत्पादों के निर्यात तथा अंतरराष्ट्रीय बाजारों की संभावनाओं पर चर्चा की गई है। इसमें सऊदी अरब, संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, ओमान और कुवैत जैसे बाजारों का उल्लेख मिलता है।

खुर्जा के उत्पादों के प्रमुख निर्यात बाजारों में पश्चिम एशिया, यूरोप, अमेरिका तथा अन्य विकसित बाजारों की भूमिका रही है। निर्यात के लिए सजावटी सिरेमिक, टेबलवेयर, इंसुलेटर और वैज्ञानिक पोर्सिलेन जैसे उत्पाद विशेष महत्व रखते हैं। हालाँकि खुर्जा का निर्यात अभी मुख्यतः कुछ विशिष्ट बाजारों और उत्पादों तक सीमित रहा है।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इसलिए निर्यात वृद्धि के लिए उत्पाद विविधीकरण और बाजार विविधीकरण दोनों आवश्यक हैं।

ज़िला निर्यात योजना में विशेष रूप से यह सुझाव दिया गया है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांग के अनुरूप डिजाइन तैयार किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए पश्चिम एशियाई बाजारों की विशिष्ट पसंद को ध्यान में रखकर डिजाइन विकसित करने से निर्यात बढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार निर्यातकों को वित्त, बैंकिंग, प्रमाणन, गुणवत्ता और सरकारी प्रोत्साहनों से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना भी आवश्यक है।

खुर्जा पॉटरी को Geographical Indication (GI) पंजीकरण प्राप्त है। GI टैग किसी उत्पाद को भौगोलिक पहचान प्रदान करता है। इससे उपभोक्ता के सामने उत्पाद की विशिष्टता और प्रामाणिकता स्थापित करने में सहायता मिलती है। खुर्जा पॉटरी के संदर्भ में GI टैग का प्रभाव ब्रांड निर्माण, विपणन तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार में विशिष्ट पहचान स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश सरकार की 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना के अंतर्गत खुर्जा सिरेमिक/पॉटरी को बढ़ावा दिया जा रहा है। ODOP का उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को बाजार, वित्त, कौशल, तकनीक और ब्रांडिंग से जोड़कर क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। उत्तर प्रदेश ODOP के आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार योजना के अंतर्गत हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं को स्वीकृति मिली है, एक लाख से अधिक कारीगरों को प्रशिक्षण एवं टूलकिट उपलब्ध कराए गए हैं तथा ODOP उत्पादों की ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों पर बिक्री को बढ़ावा दिया गया है।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक इसकी रोजगार-प्रधान प्रकृति है। सिरेमिक उत्पादन में मशीनों के प्रयोग के बावजूद अनेक चरणों में मानव श्रम की आवश्यकता बनी रहती है। मिट्टी की तैयारी, मोल्डिंग, आकार देना, सुखाना, ग्लेजिंग, पेंटिंग, डिजाइन, फायरिंग, गुणवत्ता परीक्षण, पैकिंग और विपणन जैसे कार्यों में विभिन्न स्तर के श्रमिक कार्य करते हैं। Incredible India के अनुसार खुर्जा पॉटरी उद्योग लगभग 25,000 श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है और लगभग 5,000–7,000 लोग सहायक सेवाओं में जुड़े हैं।

रोजगार को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

प्रत्यक्ष रोजगार:- कारखानों में काम करने वाले कुम्हार, मोल्डर, ग्लेजिंग कर्मचारी, पेंटर, भट्ठी कर्मचारी, पैकिंग कर्मचारी, तकनीकी श्रमिक और प्रबंधकीय कर्मचारी।

अप्रत्यक्ष रोजगार:- कच्ची मिट्टी एवं खनिजों की आपूर्ति, परिवहन, पैकेजिंग सामग्री, मशीनरी मरम्मत, ईंधन एवं ऊर्जा आपूर्ति, थोक व्यापार, खुदरा व्यापार, निर्यात एजेंसी, लॉजिस्टिक्स और अन्य सेवाएँ।

इस प्रकार सिरेमिक उद्योग का वास्तविक रोजगार प्रभाव कारखाने में कार्यरत श्रमिकों की संख्या से कहीं अधिक होता है। यह उद्योग स्थानीय युवाओं को पारंपरिक कौशल के साथ-साथ आधुनिक औद्योगिक कौशल भी प्रदान करता है। CGCRI द्वारा प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण कारीगरों तथा उद्यमियों को प्रशिक्षण दिए जाने का उल्लेख मिलता है। संस्थान के अनुसार खुर्जा और अन्य केन्द्रों के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों ग्रामीण कारीगरों को पॉटरी संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस प्रकार सिरेमिक उद्योग स्थानीय स्तर पर 'रोजगार + कौशल + उद्यमिता' का संयुक्त आधार तैयार करता है।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव परिवार आधारित रोजगार है। छोटे एवं मध्यम उद्यमों में परिवार के विभिन्न सदस्य उत्पादन, सजावट, पैकिंग, लेखांकन तथा विपणन जैसे कार्यों में योगदान कर सकते हैं। विशेष रूप से सजावटी कार्य, पेंटिंग और फिनिशिंग में हस्तकौशल की आवश्यकता होती है। यदि इन कार्यों को महिला स्वयं सहायता समूहों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सूक्ष्म उद्यमों से जोड़ा जाए तो महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ाई जा सकती है। इस दृष्टि से खुर्जा उद्योग केवल औद्योगिक उत्पादन का केन्द्र नहीं बल्कि स्थानीय सामाजिक-आर्थिक संरचना को प्रभावित करने वाला रोजगार तंत्र भी है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। उत्पाद की गुणवत्ता, डिजाइन, प्रमाणन, पैकेजिंग, समय पर आपूर्ति तथा पर्यावरणीय मानकों का पालन भी आवश्यक है। CGCRI खुर्जा केन्द्र द्वारा गुणवत्ता सुधार, उत्पाद डिजाइन, प्रक्रिया सुधार, ऊर्जा दक्षता, लागत में कमी और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है। पारंपरिक भट्टियों की तुलना में आधुनिक tunnel और shuttle kilns ने उत्पादन दक्षता में सुधार किया है। ऊर्जा की दृष्टि से भी कोयला और डीजल जैसे पारंपरिक ईंधनों से प्राकृतिक गैस की ओर परिवर्तन हुआ है। इससे ऊर्जा दक्षता तथा प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में संभावनाएँ बढ़ी हैं।

तकनीकी उन्नयन का सीधा संबंध रोजगार से भी है। नई तकनीक पुराने कुछ कार्यों की श्रम आवश्यकता को कम कर सकती है, लेकिन इसके साथ तकनीकी ऑपरेटर, गुणवत्ता नियंत्रक, डिजाइनर, मशीन ऑपरेटर और डिजिटल मार्केटिंग जैसे नए रोजगार पैदा होते हैं। अतः भविष्य की रोजगार रणनीति को 'कम कौशल वाले श्रम' से 'कुशल श्रम' की ओर स्थानांतरित करना आवश्यक है।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग की संभावनाओं के बावजूद इसके सामने कई चुनौतियाँ हैं।

- सिरेमिक उद्योग ऊर्जा-प्रधान उद्योग है। भट्टियों में उच्च तापमान पर फायरिंग के कारण ईंधन लागत उत्पादन लागत को प्रभावित करती है। ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि से छोटे उद्यमों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता प्रभावित हो सकती है।
- विदेशी बाजारों में उत्पादों के लिए कठोर गुणवत्ता मानक, पैकेजिंग मानक और प्रमाणन आवश्यकताएँ होती हैं। छोटे उद्यमों के लिए इन मानकों को पूरा करना अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है।
- ज़िला निर्यात योजना में भी इस बात पर बल दिया गया है कि निर्यात वृद्धि के लिए वैश्विक बाजार की मांग के अनुरूप डिजाइन विकसित किए जाने चाहिए।
- सिरेमिक उद्योग के लिए उपयुक्त मिट्टी और अन्य कच्चे पदार्थों की नियमित आपूर्ति आवश्यक है। BEE के अध्ययन के अनुसार खुर्जा की इकाइयों में प्रयुक्त प्रमुख मिट्टी राजस्थान और भारत के अन्य भागों से आती है।
- सिरेमिक उत्पादन से उत्पन्न अपशिष्ट तथा भट्टियों से होने वाला उत्सर्जन पर्यावरणीय चुनौती उत्पन्न कर सकता है। ज़िला निर्यात योजना में सिरेमिक अपशिष्ट के खुले में डंप किए जाने की

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

समस्या तथा उसके पुनर्चक्रण की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

- छोटी इकाइयाँ अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहती हैं। इससे उत्पादक को अंतिम बाजार मूल्य का सीमित हिस्सा प्राप्त होता है। ई-कॉमर्स, सोशल मीडिया, डिजिटल कैटलॉग और प्रत्यक्ष उपभोक्ता बिक्री के माध्यम से इस समस्या को कम किया जा सकता है।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय महत्वपूर्ण हो सकते हैं—

1. GI ब्रांडिंग का व्यापक उपयोग किया जाए और वास्तविक उत्पादों पर GI पहचान को बढ़ावा दिया जाए।
2. ODOP के अंतर्गत डिजाइन एवं नवाचार केन्द्र विकसित किए जाएँ।
3. ई-कॉमर्स आधारित निर्यात को बढ़ावा दिया जाए।
4. अमेरिका, यूरोप और पश्चिम एशिया के साथ-साथ अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका जैसे नए बाजारों की खोज की जाए।
5. छोटे उद्यमों को निर्यात प्रमाणन एवं गुणवत्ता परीक्षण में सहायता दी जाए।
6. Common Facility Centre जैसी सुविधाओं को प्रभावी रूप से उपयोग में लाया जाए।
7. कारीगरों के लिए डिजाइन, डिजिटल मार्केटिंग, पैकेजिंग और निर्यात दस्तावेजीकरण का प्रशिक्षण दिया जाए।
8. सिरेमिक अपशिष्ट के पुनर्चक्रण को बढ़ावा दिया जाए।
9. ऊर्जा दक्ष भट्टियों तथा स्वच्छ ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए।
10. खुर्जा को सिरेमिक पर्यटन से जोड़ा जाए, जिससे पर्यटक उत्पादन प्रक्रिया देख सकें और सीधे उत्पाद खरीद सकें।

उत्तर प्रदेश की नवीन निर्यात प्रोत्साहन नीति 2025–30 भी GI उत्पादों, ई-कॉमर्स आधारित व्यापार तथा सिरेमिक एवं संबद्ध उद्योगों को निर्यात प्रोत्साहन के दायरे में रखती है। इससे खुर्जा जैसे क्लस्टर के लिए भविष्य में निर्यात विस्तार की संस्थागत संभावनाएँ बढ़ती हैं।

खुर्जा सिरेमिक उद्योग उत्तर प्रदेश की स्थानीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। लगभग छह शताब्दियों की परंपरा से विकसित यह उद्योग आज पारंपरिक पॉटरी से आगे बढ़कर आधुनिक सिरेमिक उत्पादन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। इसके उत्पादों में घरेलू क्रॉकरी से लेकर सजावटी वस्तुएँ, स्टोनवेयर, पोर्सिलेन, इंसुलेटर और अन्य तकनीकी उत्पाद सम्मिलित हैं। CSIR-CGCRI जैसे संस्थानों की तकनीकी सहायता ने खुर्जा के सिरेमिक क्लस्टर के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रोजगार की दृष्टि से यह उद्योग अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपलब्ध सरकारी एवं संस्थागत स्रोत अलग-अलग वर्षों में रोजगार की अलग-अलग संख्या प्रस्तुत करते हैं, परंतु सभी स्रोत इस बात की पुष्टि करते हैं कि खुर्जा सिरेमिक उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों को आजीविका प्रदान करता है। इस उद्योग की रोजगार क्षमता केवल उत्पादन इकाइयों तक सीमित नहीं है, बल्कि कच्चे माल की आपूर्ति, परिवहन, पैकेजिंग, व्यापार, विपणन और निर्यात जैसी सहायक गतिविधियों तक विस्तृत है।

निर्यात की दृष्टि से खुर्जा में पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं। GI टैग और ODOP जैसी पहलें खुर्जा के उत्पादों को विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पश्चिम एशिया, अमेरिका, यूरोप तथा अन्य क्षेत्रों के लिए अवसर मौजूद हैं। किंतु निर्यात को नई ऊँचाई तक पहुँचाने के लिए गुणवत्ता, डिजाइन, उत्पाद विविधीकरण, ऊर्जा दक्षता, पैकेजिंग, प्रमाणन और डिजिटल विपणन पर विशेष ध्यान देना होगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि खुर्जा सिरेमिक उद्योग को केवल एक पारंपरिक पॉटरी उद्योग के रूप में देखना उचित नहीं होगा। यह स्थानीय संस्कृति, कौशल, MSME उद्यमिता, रोजगार और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को जोड़ने वाला क्षेत्रीय औद्योगिक क्लस्टर है। यदि सरकारी योजनाओं, तकनीकी संस्थानों, स्थानीय उद्यमियों और कारीगरों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया जाए तो खुर्जा को भारत के प्रमुख वैश्विक सिरेमिक निर्यात केन्द्रों में विकसित किया जा सकता है। इसके साथ ही पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ उत्पादन और श्रमिकों के कौशल उन्नयन को विकास की केंद्रीय रणनीति में शामिल करना आवश्यक होगा।

भविष्य में खुर्जा की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखते हुए आधुनिक डिजाइन, तकनीक और वैश्विक बाजार की आवश्यकताओं के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करता है। इस प्रकार निर्यात संवर्धन के साथ-साथ खुर्जा सिरेमिक उद्योग स्थायी रोजगार, स्थानीय उद्यमिता और क्षेत्रीय आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. CSIR-Central Glass & Ceramic Research Institute (CGCRI), Khurja Centre. Khurja: overview, areas of research and technology development. Khurja: CSIR-CGCRI, Government of India;. Available from: https://www.cgcri.res.in/campus/khurja/
2. CSIR-CGCRI. History and technological status of Khurja pottery cluster. Department of Science and Technology, Government of India;. Available from: https://www.cgcri.res.in/historyandtechnew/
3. Government of India, District Export Hubs. Bulandshahr district export plan/Khurja export plan. New Delhi: Department of Commerce, Government of India;. Available from: https://www.exporthubs.gov.in/resources/docs/DEPC-e35da562-00f8-4585-a225-47ed952f3097-Bulandsher_distt-plan.pdf
4. Office of the Development Commissioner, MSME. District industrial potential survey/industrial profile of Bulandshahr. New Delhi: Government of India. Available from: https://www.dcmsme.gov.in/dips/14%20DIPS%20Bulandshahar1.pdf
5. Bureau of Energy Efficiency. Promoting energy efficiency and renewable energy in selected MSME clusters in India: ceramics – Khurja cluster. New Delhi: Government of

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

India;. Available from: https://sidhiee.beeindia.gov.in/AboutUs/ceramics
6. Intellectual Property India. Geographical Indications Registry: Khurja Pottery, Application No. 178. Government of India;. Available from: https://search.ipindia.gov.in/GIRPublicSearch/Application/Details/178
7. One District One Product, Uttar Pradesh. ODOP achievements and programme information. Government of Uttar Pradesh;. Available from: https://www.odopup.in/en/article/achievements
8. Invest UP, Government of Uttar Pradesh. Uttar Pradesh Export Promotion Policy 2025-30. Government of Uttar Pradesh;. Available from: https://invest.up.gov.in/uttar-pradesh-export-promotion-policy-2025-30-2/
9. Ministry of Tourism, Government of India. Incredible India: Khurja Pottery. Government of India;. Available from: https://www.incredibleindia.gov.in/en/uttar-pradesh/khurja-pottery
10. Press Information Bureau, Government of India. Factsheet: Khurja ceramics and MSME/ODOP-related developments. Government of India. Available from: https://www.pib.gov.in/FactsheetDetails.aspx?ModuleId=16&NoteId=150330&id=150330&lang=2&reg=48
11. CSIR-CGCRI. Rural industrialization and skill development at outreach centres: Khurja and Naroda. Government of India;. Available from: https://www.cgcri.res.in/wp-content/uploads/2023/Achievement_CGCRI.pdf
12. Government of Uttar Pradesh. One District One Product – Bulandshahr: Khurja pottery/ceramics. Lucknow: Invest UP, Government of Uttar Pradesh. Available from: https://invest.up.gov.in/wp-content/themes/investup/pdf/_FINAL-ODOP-ENG-BOOKLET-compressed.pdf

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

तृप्ति सिंह अर्थशास्त्र विषय में शोध एवं अकादमिक अध्ययन से जुड़ी हैं। वे मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत में अर्थशास्त्र का अध्ययन कर रही हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि अर्थशास्त्र, सामाजिक-आर्थिक मुद्दों तथा समकालीन आर्थिक विकास से संबंधित विषयों में है।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/